

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 29, रोमन्स 6

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

पिछले दो सत्रों में मैं जो करना चाहता हूँ वह दो नए नियम के ग्रंथों के माध्यम से काम करना है ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि बाइबिल के पाठ को समझने के लिए इन विभिन्न तरीकों को कैसे लागू किया जा सकता है और मैं चाहता हूँ कि आप इसका अनुसरण करें और पहचानने का प्रयास करें। मैं स्पष्ट रूप से यह नहीं कहने जा रहा हूँ कि अब मैं ऐतिहासिक काम कर रहा हूँ या अब मैं कर रहा हूँ, मैं शाब्दिक या शब्द विश्लेषण या शब्द अध्ययन कर रहा हूँ या अब मैं व्याकरण पर ध्यान दे रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप यह पहचानने में सक्षम हों कि कौन सी विधि लागू की जा रही है, लेकिन मैं स्पष्ट रूप से यह नहीं बताऊंगा कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन जैसा कि मैं विभिन्न तरीकों को लागू करने वाले पाठ के माध्यम से काम करता हूँ, मैं चाहता हूँ कि आप पहचानने में सक्षम हों और मैं जो कर रहा हूँ उसके प्रति सजग रहो।

पहला पाठ जिसे मैं देखना चाहता हूँ वह रोमियों की पुस्तक में पॉल के पत्रों में से एक से आता है। यह रोमन अध्याय 6 1 से 11 है जिसके बारे में हम पहले ही साहित्यिक संदर्भ से संबंधित कुछ चीजों के संबंध में बात कर चुके हैं, लेकिन मैं इसे एक पाठ के रूप में और अधिक विस्तार से देखना चाहता हूँ जो मुझे लगता है कि विभिन्न व्याख्याओं के तरीके का उदाहरण है दृष्टिकोण लागू किये जा सकते हैं। तो रोमियों अध्याय 6 1 से 11 और बस इस पाठ को पढ़ें क्योंकि यह छोटा है और इसमें केवल एक मिनट लगेगा, लेकिन इसे पढ़ने से आप सामग्री से परिचित हो जाएंगे और क्या हो रहा है।

तो फिर हमें क्या कहना चाहिए? क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह बढ़े? किसी भी तरह से नहीं। हम पाप के लिये मर गये। अब हम इसमें कैसे रह सकते हैं? या क्या तुम नहीं जानते, कि हम सब ने, जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया? इसलिये हम सब मृत्यु का बपतिस्मा पाकर उसके साथ गाड़े गए, कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नया जीवन जी सकें।

यदि हम उसकी मृत्यु में इस तरह उसके साथ एकजुट रहे हैं, तो हम निश्चित रूप से उसके पुनरुत्थान में भी उसके साथ एकजुट रहेंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि पाप का शरीर मिट जाए, और हम फिर पाप के दास न रहें। क्योंकि जो कोई मर गया वह पाप से मुक्त हो गया।

अब यदि हम मसीह के साथ मरे, तो हमें विश्वास है, कि हम भी उसके साथ जिंएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि मसीह मरे हुआओं में से जी उठा, इसलिये वह फिर नहीं मर सकता। मृत्यु का अब उस पर प्रभुत्व नहीं रहा।

उस मृत्यु से वह मरा, वह हमेशा के लिए एक ही बार पाप करने के लिए मर गया, परन्तु जो जीवन वह जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। फिर पद 11, इसी रीति से अपने आप को पाप के लिये तो मरा हुआ, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो। अब सबसे पहले यह पूछना ज़रूरी है कि रोमन्स क्यों लिखा गया? रोमियों की पुस्तक के लेखन के आसपास की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ क्या हैं? और यह हमें इस पाठ की पुस्तक को समझने में कैसे मदद करता है? सबसे पहले, जब आप स्वयं रोमनों के पाठ को देखते हैं, तो इसमें कुछ भौगोलिक स्थानों के संदर्भ में स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि पॉल ने इसे क्यों लिखा और किन परिस्थितियों के कारण इसे लिखा।

उदाहरण के लिए, अध्याय 15 और पद 25 में, रोमियों अध्याय 15, और मैं वास्तव में 23 और श्लोक 23 से शुरू होने वाले कुछ छंदों को पढ़ूंगा, लेकिन अब मेरे लिए इन क्षेत्रों में काम करने के लिए कोई जगह नहीं है, और तब से मैं कई वर्षों से आपसे मिलने के लिए उत्सुक हूँ, मेरी योजना है कि जब मैं स्पेन जाऊंगा तो ऐसा करूंगा। मुझे आशा है कि मैं वहाँ से गुजरते समय आपसे मिलूंगा और मेरी यात्रा के दौरान और कुछ समय तक आपकी कंपनी का आनंद लेने के बाद आप मेरी सहायता करेंगे। हालाँकि, अब मैं वहाँ संतों की सेवा के लिए यरूशलेम जा रहा हूँ।

मैसेडोनिया और अखाया यरूशलेम में पवित्र लोगों के बीच गरीबों के लिए योगदान देने से प्रसन्न थे। वे ऐसा करके प्रसन्न थे, और वास्तव में वे इसके ऋणी हैं। क्योंकि यदि अन्यजातियों ने यहूदियों

के आत्मिक आशीषों में भाग लिया था, तो उनका यह दायित्व भी है कि वे उनके साथ भौतिक आशीषों में भी भाग लें।

तो पॉल स्पष्ट रूप से इंगित करता है, पॉल अध्याय 15 में इन संदर्भों में, इन भौगोलिक संदर्भों में कई चीजों को स्पष्ट रूप से इंगित करता है। रोमियों के बाद के अध्यायों के एक अन्य खंड में, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पॉल संभवतः कोरिंथ शहर से लिख रहा है। लेकिन इन अनुभागों में जो हमने पढ़ा है, हम एक परिदृश्य का निर्माण कर सकते हैं।

नंबर एक, पॉल स्पष्ट रूप से यरूशलेम की ओर जा रहा है। पॉल उस भेंट को लेकर यरूशलेम जा रहा है जिसे उसने अखाया की कलीसियाओं से इकट्ठा किया है, और अब वह उसे यरूशलेम ले जा रहा है। लेकिन साथ ही, ये ग्रंथ पॉल के इरादे को स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि वह अंततः रोम जाने के लिए पश्चिम की ओर वापस जाने का इरादा रखता है, और उससे भी आगे, स्पेन जाने के लिए।

तो पॉल स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि रोमन चर्च एक महत्वपूर्ण चर्च है जिसे वह देखना चाहता है, हालांकि स्पष्ट रूप से उसने अभी तक नहीं किया है, लेकिन अब वह अखाया के क्षेत्र में अपने मंत्रालय के बाद एक भेंट ले रहा है। अब वह एक भेंट के साथ यरूशलेम वापस जा रहा है, लेकिन इस इरादे से कि वह स्पेन वापस जाएगा, और उससे भी आगे पश्चिम की ओर जाएगा, या मुझे खेद है, रोम में, लेकिन रोम से परे, रोम में चर्चों को और भी पश्चिम में स्पेन तक जाने के लिए। एक और महत्वपूर्ण विशेषता जो बाइबिल से इतर जानकारी से मिलती है वह यह है कि ईस्वी सन् 49 में रोमन सम्राट क्लॉडियस ने ईस्वी सन् 49 में यहूदियों को रोम शहर से निष्कासित कर दिया था।

और कुछ में, विशेष रूप से, ऐतिहासिक लेखन में इसका उल्लेख है जो क्लॉडियस, सम्राट क्लॉडियस को संदर्भित करता है, जिसने सभी यहूदियों को रोम से निष्कासित कर दिया था, और ऐसा कुछ साल बाद तक नहीं हुआ था, ईस्वी सन् 54, जब क्लॉडियस की मृत्यु हो गई, और यहूदियों को लौटने की अनुमति दे दी गई, और इसके कुछ ही समय बाद, लगभग 55 से 57 ईस्वी

में, रोमनों की पुस्तक लिखी गई। तो इन सभी सबूतों के आधार पर, क्या यह सुझाव देना संभव है कि पॉल ने यह पत्र क्यों लिखा होगा? दरअसल, अधिकांश व्याख्याकार सोचते हैं कि रोमनों की पुस्तक के एक से अधिक उद्देश्य हैं, और कम से कम निम्नलिखित तीन उद्देश्य पाठ और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में हम जो जानते हैं, उससे उभरते प्रतीत होते हैं। नंबर एक यह है कि पॉल रोम की यात्रा के लिए और अंततः स्पेन की यात्रा के लिए पश्चिम की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

अर्थात्, ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी आगे की मिशनरी गतिविधि के लिए आधार और समर्थन के रूप में रोम को सुरक्षित करना चाहता है। इसलिए वह भविष्य में जो करना चाहता है, उसके लिए रोम को एक आधार के रूप में सुरक्षित करने के लिए लिखता है, सुसमाचार का प्रचार करने की उसकी चल रही मिशनरी गतिविधि। लेकिन दूसरा, इस वजह से, शायद, नंबर एक की वजह से, पॉल उस सुसमाचार को कुछ विस्तार से समझाने का प्रयास करता प्रतीत होता है जिसका वह प्रचार करने जा रहा है।

शायद, कुछ गलतफहमियों और अपने विरोधियों, विशेषकर यहूदियों के कुछ विरोध के कारण उन्हें इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता है। और अब पॉल, रोम को एक आधार के रूप में सुरक्षित करते हुए, उस सुसमाचार को कुछ विस्तार से समझाता है जिसका वह प्रचार करता है। और इसलिए हम रोमनों में पॉल की शिक्षाओं की सबसे स्पष्ट और सबसे विस्तृत व्याख्याओं में से एक पाते हैं।

और फिर तीसरा यह है कि पॉल यहूदी और अन्यजातियों को एकजुट करने के लिए लिखता है, शायद क्लॉडियस के तहत यहूदियों के इस निष्कासन से संबंधित है। और अब वे वापस लौटते हैं और पाते हैं कि चर्च मुख्य रूप से गैर-यहूदी है, और इसलिए उन्हें वापस एकीकृत करने में जो संघर्ष हुआ होगा, वह यहूदी और गैर-यहूदी के बीच संबंधों में दरार का कारण बन सकता है। और इसलिए पॉल यहूदी और गैर-यहूदी ईसाइयों को एकजुट करने के लिए भी लिखता है।

तो रोमियों की पुस्तक के पीछे कम से कम वे तीन उद्देश्य छिपे प्रतीत होते हैं। लेकिन आइए अध्याय 6 को देखें। इस तर्क के भाग के रूप में, रोमियों अध्याय 6 में पॉल के सुसमाचार की यह विस्तृत व्याख्या, पहली चीज़ जो हम करना चाहते हैं वह है इसे इसके संदर्भ में रखना। रोमियों अध्याय 6, स्पष्ट रूप से, अध्याय 5 से अनुसरण करता है। लेकिन इसके बारे में जो महत्वपूर्ण है वह अध्याय 5 श्लोक 1 से 11 तक है, विशेष रूप से, एक खंड शुरू होता है जहां पॉल उस औचित्य के परिणामों की जांच करना शुरू करता है जिसके लिए उसने पहले चार में तर्क दिया है। अध्याय.

पहले चार अध्यायों में, उन्होंने केवल विश्वास द्वारा औचित्य के लिए तर्क दिया है जो अब यहूदी और अन्यजातियों के लिए उपलब्ध है। अब, कानून के कार्यों के अलावा, यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर, उन्हें उचित ठहराया जा सकता है और भगवान के लोग घोषित किए जा सकते हैं, धर्मी घोषित किया जा सकता है। लेकिन अब विश्वास द्वारा उस औचित्य के परिणाम विशेष रूप से अध्याय 5 से 8 में देखे जाते हैं। यानी, जो आशा उनके पास अब है, वह आशा जो अब उनके पास विश्वास द्वारा औचित्य के माध्यम से है, इसका मतलब है कि, सबसे पहले, यह आशा आधारित है पर, और इस औचित्य के परिणामस्वरूप, भगवान के क्रोध से मुक्ति मिलती है, अध्याय 5 श्लोक 1 से 11।

इसका अर्थ पाप की शक्ति से मुक्ति भी है। अध्याय 6 में इसका अर्थ है कानून से मुक्ति। अध्याय 7 में, और अंततः, उनकी आशा का अर्थ है मृत्यु से मुक्ति, और उनके औचित्य का परिणाम मृत्यु से मुक्ति है।

इसलिए ये अध्याय प्रदर्शित करते हैं कि औचित्य से आने वाली आशा उस स्वतंत्रता पर आधारित है जो परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के क्रोध से, न्याय से, पाप से, उन पर शासन करने वाली पाप की शक्ति से, मृत्यु और कानून से भी प्राप्त है। लेकिन 6, 1 से 11, अधिक विशेष रूप से, अध्याय 5, अध्याय 5 के दूसरे भाग और श्लोक 12 से 21 तक दो तरीकों से स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता प्रतीत होता है। नंबर एक, हम पहले ही अध्याय 6, 1 से 11 तक देख चुके हैं, जो पाठ हमने अभी कुछ समय पहले पढ़ा है, वह अध्याय 5 और श्लोक 20 में कही गई किसी बात से संभावित

आपत्ति का जवाब है, जहां पॉल ने कहा, "। ..कानून इसलिए जोड़ा गया ताकि अपराध बढ़ें, लेकिन जहां पाप बढ़ा, वहां अनुग्रह और भी अधिक बढ़ गया।" और इसलिए अध्याय 6, श्लोक 1, एक प्रश्न से शुरू होता है, यदि जहां पाप बढ़ता है वहां अनुग्रह प्रचुर मात्रा में होता है, तो क्या हमें और अधिक पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह और भी अधिक बढ़ सके? जितना अधिक मैं पाप करूंगा, उतना ही अधिक अनुग्रह बढ़ेगा और प्रचुर मात्रा में होगा।

तो एक ओर, पॉल ने अध्याय 5 में कही गई किसी बात पर आधारित एक संभावित आपत्ति का जवाब एक प्रश्न उठाकर दिया। अब, इसे इसी रूप में जाना जाता है, यह डायट्रीब के रूप में जाना जाता है, यानी, एक काल्पनिक प्रतिद्वंद्वी का परिचय देकर, पॉल इस काल्पनिक प्रतिद्वंद्वी के साथ एक तरह के संवाद में प्रवेश करता है जो सवाल उठाता है, संभावित आपत्तियां उठाता है। इसमें क्या शामिल है, इस पर बहुत दिलचस्प अध्ययन हुआ है।

कई लोगों ने इसे कक्षा में पढ़ाने की एक विशिष्ट ग्रीको-रोमन तकनीक से जोड़ा है, इसलिए यह सिर्फ निर्देश देने का एक तरीका था, यह शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण में अपने तर्क को आगे बढ़ाने के लिए अपने तर्क पर संभावित आपत्तियां उठाने का एक तरीका था। यह आवश्यक रूप से किसी ने जो कहा है उसका प्रतिनिधित्व कर सकता है या नहीं भी कर सकता है, यह लेखक का हो सकता है, बस लेखक का अपने शिक्षण में अपने तर्क को आगे बढ़ाने का अपना तरीका है। इसलिए ऐसा लगता है कि पॉल एक काफी सामान्य रूप पर भरोसा कर रहे हैं, जिसे विद्वानों ने एक डायट्रीब के रूप में पहचाना है, जिसकी जड़ें दार्शनिक स्कूलों और उनके शिक्षण में हो सकती हैं।

तो स्पष्ट रूप से पॉल, अतिशयोक्तिपूर्ण अंदाज में, संभावित आपत्तियों का अनुमान लगा रहा है और अपने तर्क को आगे बढ़ाने के तरीके के रूप में उनका जवाब दे रहा है। हालाँकि यह बताना मुश्किल है कि क्या ये आपत्तियाँ, ये प्रश्न जो उसने उठाए हैं, पॉल का अपने तर्क को आगे बढ़ाने और संभावित आपत्तियों का अनुमान लगाने का अपना तरीका है, या क्या ये प्रश्न वास्तविक आपत्तियाँ उठाते हैं जो उसके विरोधियों, या यहूदीवादियों, उदाहरण के लिए, ने स्वयं उठाई हैं। यह एक संभावना है।

लेकिन मैं बस इस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ कि यह प्रश्न पॉल के तर्क को आगे बढ़ाने और अध्याय 6 को अध्याय 5 से जोड़ने के लिए कैसे काम करता है। ताकि अध्याय 6 अध्याय 5 से संबंधित हो, पहला तरीका यह प्रश्न-उत्तर प्रारूप है, वह प्रश्न जो एक है ऐसा प्रश्न जो पॉल द्वारा अभी कही गई किसी बात पर काल्पनिक या संभावित आपत्ति उठाता हो। दूसरा तरीका जो इससे संबंधित है, मैं सोचता हूँ कि अध्याय 6 में, और हम इसे बस एक क्षण में देखेंगे, एडम-क्राइस्ट विरोधाभास जो हमने अध्याय 5 में पाया था वह अभी भी अध्याय 6 में जारी है। यानी, अध्याय 5 में हम पाते हैं आदम और मानवता को पाप और मृत्यु में धकेलने में उसने जो किया और पूरा किया, उसके बीच यह विरोधाभास है, और अब अध्याय 5 में भी, यीशु मसीह क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, अपने आज्ञाकारिता के कार्य के माध्यम से, आदम के अवज्ञा के कार्य के विपरीत, क्या करता है, उसका पाप, अब उसकी आज्ञाकारिता के कार्य में, मसीह अब धार्मिकता और जीवन लाता है। इसलिए आदम और मसीह को मानवता के दो प्रमुखों के रूप में चित्रित किया गया है।

पुरानी मानवता का आदम, पाप और मृत्यु द्वारा शासित और शासित था, और अब यीशु मसीह एक नई मानवता का गठन और स्थापना कर रहे हैं, जो जीवन और धार्मिकता द्वारा विशेषता और शासित है। तो दो मानवता, दो क्षेत्र अपने-अपने सिरों के साथ, आदम और यीशु मसीह। ऐसा प्रतीत होता है कि यह रोमन अध्याय 6 में हम जो पाते हैं उसे प्रभावित करना जारी रखेगा। दोनों को जोड़ने का एक और तरीका यह है कि, अध्याय 6 यह प्रदर्शित करने के लिए भी काम कर सकता है कि, 520 से संभवतः जो निष्कर्ष निकाला जा सकता है, उसके विपरीत, यदि जहां पाप बढ़ता है, तो अनुग्रह होता है और भी अधिक बढ़ता है, तो क्या हमें पाप करते रहना चाहिए? अब पॉल कहते हैं, नहीं, औचित्य, किसी को वह करने के लिए स्वतंत्र करने के बजाय जो वह चाहता है, औचित्य के अपरिहार्य नैतिक परिणाम होते हैं, और अध्याय 6 एक स्पष्ट अनुस्मारक है कि कोई भी पाप नहीं कर सकता है।

यदि जहां पाप बढ़ता है, वहां अनुग्रह और भी अधिक बढ़ता है, तो यह पाप जारी रखने का औचित्य नहीं है। तो अध्याय 6 दिखाएगा कि अध्याय 5 में परमेश्वर के लोगों के औचित्य और

आशा के नैतिक परिणाम होते हैं। इसलिए अध्याय 6, 1 से 11 तक अधिक बारीकी से देखने पर, हम पहले ही देख चुके हैं कि यह प्रश्न-उत्तर प्रारूप के अनुसार विकसित होता है।

अध्याय 1, या मुझे खेद है, अध्याय 6, श्लोक 1 एक प्रश्न उठाता है जो हमने देखा वह 520 की संभावित गलतफहमी पर आधारित है, या 520 में पॉल के तर्क पर संभावित आपत्ति पर आधारित है, जिसके बाद उस प्रश्न का उत्तर दिया गया है। तो पूरा पाठ इस प्रश्न-उत्तर प्रारूप के अनुसार संचालित होता है। पद 1 और फिर 2 से 11 में प्रश्न उस प्रश्न का उत्तर बनता है।

फिर, सवाल यह है कि क्या इसलिए, क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह बढ़ सके? यही उत्तर है। प्रश्न दो रूपों में है। तो फिर हमें क्या कहना चाहिए, यह पहला प्रश्न है, और फिर अधिक विशेष रूप से, प्रश्न यह है कि क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह बढ़ सके? यह रोमियों 6, 1 से 11, विशेषकर 2 से 11 का शेष पाठ, उस प्रश्न का उत्तर है।

अब, प्रतिक्रिया स्वयं कम से कम दो भागों में है। संख्या 1 श्लोक 2 में उस प्रश्न का प्रारंभिक उत्तर यह है कि वह किसी भी तरह से प्रसिद्ध नहीं है, और यह देखने के लिए कई अनुवादों का पता लगाना दिलचस्प है कि वे इसे कैसे संभालते हैं। किसी भी तरह से, या ऐसा कभी नहीं हो सकता है, या पुराने किंग जेम्स संस्करण में, मुझे लगता है, कहा गया है, भगवान न करे।

यानी, पहली प्रतिक्रिया एक तरह से पूरी तरह से उचित हस्तक्षेप है। किसी भी तरह से, किसी भी तरह से, ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। भगवान न करे कि ऐसा हो, कि जहां अनुग्रह बढ़ता है, तो क्या हमें अधिक पाप करना चाहिए ताकि अनुग्रह बढ़ सके? भगवान न करे कि कभी ऐसा हो।

ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह प्रश्न पर एक प्रकार का प्रारंभिक आक्रोश है। किसी भी तरह से नहीं।

लेकिन पॉल आगे बढ़ता है, प्रश्न के उत्तर का दूसरा भाग यह है कि पॉल अधिक विस्तार से वर्णन करता है कि यह बेतुका क्यों है? ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए? और, मुझे लगता है कि कुंजी यह है

कि प्रतिक्रिया का मुख्य भाग श्लोक 2 के दूसरे भाग में पाया जाता है। हम पाप के लिए मर गए हैं। अब हम इसमें कैसे रह सकते हैं? वह प्रश्न का दूसरा भाग है। फिर, पहला विस्फोट है, भगवान न करे, और अब इसे और अधिक सामग्री देने के लिए, भगवान न करे इसका कारण यह है कि हम पाप के लिए मर गए हैं।

तो अब हम इसमें कैसे रह सकते हैं? वहाँ, परमेश्वर के लोगों के बारे में जो पाप के लिए मर गए हैं, पाप में जीने की तुलना में कुछ असंगत है। वहाँ एक विरोधाभास है, एक असंगति है। लेकिन यह, इसका यह भाग, 6, 1 से 11 तक आगे देखने के लिए, प्रतिक्रिया का यह भाग, हम पाप के लिए मर चुके हैं, हम अब इसमें कैसे रह सकते हैं? अब इसे श्लोक 3 से 11 के शेष भाग में और अधिक स्पष्ट किया जाएगा।

दूसरे शब्दों में, इसका क्या मतलब है कि हम पाप के लिए मर गए हैं? हम पाप के प्रति इस प्रकार कैसे मर गए कि यह बेतुका हो गया कि हम उसमें जीवित रहेंगे? तो इसका बाकी हिस्सा, पद 3 से शुरू करते हुए, पॉल यह समझाना शुरू करेगा कि यह कैसे होता है कि हम पाप के लिए मर गए हैं। क्योंकि जाहिर है, वह, वह संबोधित कर रहा है, वह उन पाठकों को संबोधित कर रहा है जो अभी भी जीवित हैं। वह यह पत्र उन लोगों को क्यों लिखेगा जो वास्तव में मर चुके हैं? तो, तो अब वह यह समझाने जा रहे हैं कि पाठक किस तरह से पाप के प्रति मर गए हैं जो इसे इतना बेतुका बना देता है, और, और विरोधाभासी है कि वे इसमें जीना जारी रखेंगे।

और फिर श्लोक 11 सारांश उपदेश होगा जो आपत्ति श्लोक 1 का खंडन करता है। क्या हमें पाप में रहना जारी रखना चाहिए ताकि अनुग्रह बढ़ सके? श्लोक 11 एक सारांश आदेश में इसे पलट देता है। नहीं, इसके बजाय अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ, परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित मानें। जैसा कि हमने कहा, पद 2 में यह तथ्य कि हम पाप के लिए मर गए हैं, शेष पाठ में और अधिक स्पष्टीकरण की मांग करता है।

लेकिन मैं यह जांच कर शुरुआत करना चाहता हूँ कि इसका क्या मतलब है, पॉल का यह कहने का क्या मतलब है कि हम मर चुके हैं? क्या हमें इसे शायद हल्के शब्दों में समझना चाहिए, जहां

तक इसका सीधा सा अर्थ है कि हम पाप का जवाब नहीं देते हैं, या कि पाप का हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, या ऐसा ही कुछ। मुझे लगता है, मुझे लगता है कि पॉल मृत्यु का उपयोग अपने सबसे मजबूत अर्थ में करता है, और मुझे लगता है कि वह इसका उपयोग शारीरिक मृत्यु के अर्थ में करता है। अर्थात्, जैसा कि हमने अध्याय 5 श्लोक 12 से 21 में देखा, आदम और मसीह के बीच यह विरोधाभास जो मैंने कहा, अभी भी इस खंड, अध्याय 6, 1 से 11 को प्रभावित करता है।

5, 12 से 21 में, हमने देखा कि पॉल, पॉल दो युगों, या दो युगों, या दो मानवताओं के साथ काम करते हैं, जिनका अपना-अपना सिर होता है। पुराना युग, पुराना युग, आदम को सिर मानकर पुरानी मानवता, जो पाप और मृत्यु पर हावी थी, और फिर एक नया युग, एक नया युग, एक नई मानवता, जिसका निर्माण और उद्घाटन यीशु के व्यक्तित्व में हुआ है मसीह. और मुझे लगता है कि पॉल की समझ के साथ काम करना, पुराने युग से मुक्त होने या नए युग में संक्रमण करने का एकमात्र तरीका मृत्यु के माध्यम से है।

पुराने युग और आदम के अधीन बुढ़ापे की शक्ति और प्रभाव से बचने का एकमात्र तरीका शारीरिक रूप से मरना है। इसलिए आदम के अधीन, पुराने युग की शक्ति और अधिकार से मुक्त होने के लिए किसी को मरना होगा। यहां ध्यान देने वाली दूसरी बात यह है कि पॉल पाप शब्द का उपयोग कैसे करता है।

वह सिन सिंग शब्द का प्रयोग एकवचन के रूप में करता है। ध्यान दें वह यह नहीं कहता कि आप अपने पापों के लिए मर गए हैं, बल्कि वह कहता है कि आप पाप के लिए मर गए हैं, एकवचन। ऐसा इसलिए है क्योंकि मुझे लगता है कि पॉल पाप को एक ऐसी शक्ति के रूप में देखता है जो हम पर शासन करती है और हमें नियंत्रित करती है, उस पुराने युग और आदम के अधीन बुढ़ापे के हिस्से के रूप में।

तो एकमात्र तरीका जिससे मैं वर्तमान बुराई की शक्ति, वर्तमान युग, वर्तमान युग, या आदम के अधीन, पाप के प्रभुत्व से मुक्त हो सकता हूं या उससे बच सकता हूं, एकमात्र तरीका जिससे मैं

पाप के नियंत्रण और प्रभुत्व और शासन से बच सकता हूं , शारीरिक रूप से मरना है। लेकिन फिर भी यह सवाल उठता है कि हम किस तरह कह सकते हैं कि हम शारीरिक रूप से मर गए हैं? हम किस प्रकार कह सकते हैं कि हमने एक ऐसी मृत्यु का अनुभव किया है जिसने आदम के अधीन वर्तमान युग के शासन और शासन को, और हमारे ऊपर पाप के शासन और प्रभुत्व को समाप्त कर दिया है? अध्याय, श्लोक 3 और 4 इसकी व्याख्या करते हैं। हम वास्तव में मर चुके हैं, अर्थात्, हमने वास्तव में उस मृत्यु का अनुभव किया है जो हमें वर्तमान युग की शक्ति से मुक्त करती है।

हम वास्तव में मर चुके हैं और उस शारीरिक मृत्यु, उस युग-समाप्ति वाली मृत्यु का अनुभव कर चुके हैं, किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़कर जो वास्तव में मर चुका है, और वह यीशु मसीह का व्यक्तित्व है। यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने युग को समाप्त कर दिया है, और यीशु मसीह में शामिल होने के कारण, हम भी उस मृत्यु में भागीदार हैं जो पुराने युग को समाप्त करती है, और मृत्यु के शासन और शासनकाल को समाप्त करती है, और हमें उस शक्ति से मुक्त करता है। लेकिन आप देखेंगे कि पॉल के लिए, वह केवल यीशु की मृत्यु पर चर्चा करने से आगे बढ़ता है, जो पुराने युग को समाप्त करता है, लेकिन वह इस तथ्य पर भी चर्चा करता है कि यीशु का पुनरुत्थान एक नए युग का उद्घाटन करने के लिए आवश्यक है।

इसलिए , पॉल के अनुसार, हम भी मसीह के साथ जुड़ गए हैं, न केवल उनकी मृत्यु में, उनकी मृत्यु में, बल्कि हम उनके पुनरुत्थान में भी शामिल हो गए हैं। हम मसीह और उसकी मृत्यु के साथ एकजुट हो गए हैं, जिससे हम पाप की शक्ति और आदम की अध्यक्षता में पुराने युग से मुक्त हो गए हैं, लेकिन मसीह के पुनरुत्थान में शामिल होने के माध्यम से, हम अब एक नए युग में भी भाग लेते हैं, मसीह ने जिस नए युग का उद्घाटन किया है, उसकी विशेषता जीवन और धार्मिकता है, जैसा कि हमने 5, 12, से 21 में देखा। इसमें आगे की कड़ी यह पूछना है कि, यह कैसे हुआ कि हम मसीह से जुड़ गए हैं? पॉल इसे बपतिस्मा से जोड़ता है।

उनका कहना है कि यह बपतिस्मा के माध्यम से है। बपतिस्मा वह साधन है जो हमें मसीह से जोड़ता है, और हमें मसीह से जोड़ता है, और उनकी मृत्यु, उनके दफनाने और उनके पुनरुत्थान से जोड़ता है। इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पॉल का यहाँ बपतिस्मा से क्या मतलब है।

कई लोगों ने इसकी व्याख्या आध्यात्मिक बपतिस्मा के रूप में की है। अर्थात्, पॉल बपतिस्मा लेने या पवित्र आत्मा में डूबे होने की बात कर रहा है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 12 जैसे पाठ में पाया जाता है, और विशेष रूप से नए नियम के कई छात्र यहाँ रोमियों 6 में बपतिस्मा की इस व्याख्या के प्रति आकर्षित हुए हैं। पौलुस ने अन्यत्र जो कहा है उसका खंडन करने से बचने के लिए, कि हम केवल विश्वास के द्वारा न्यायसंगत हैं, न कि कानून के कार्यों के द्वारा। उन्होंने अध्याय 1 से 4 में इसके लिए तर्क दिया है। तो अब, क्या पॉल के लिए एक और कार्य, बपतिस्मा, को शुरू करना असंगत नहीं होगा, जिसके माध्यम से हम बचाए जाते हैं और मसीह के साथ एकजुट होते हैं? इसलिए कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि इसका तात्पर्य आध्यात्मिक बपतिस्मा से होना चाहिए।

हालाँकि, मुझे लगता है कि इसे भौतिक जल बपतिस्मा के रूप में, आरंभिक, प्रारंभिक चर्च के संस्कार के रूप में पहचानने के लिए अभी भी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है, जिसने एक तरह से उन्हें चर्च में और भगवान के लोगों में शामिल किया। उदाहरण के लिए, आमतौर पर, जब बपतिस्मा का उपयोग रूपक के रूप में किया जाता है, तो इसमें अक्सर एक योग्यता होती है जैसे कि आत्मा में बपतिस्मा या ऐसा कुछ। तो शायद यहाँ बपतिस्मा का उपयोग उसके भौतिक अर्थ में पानी के बपतिस्मा के रूप में किया जाता है, फिर से, प्रारंभिक चर्च के संस्कार के रूप में।

लेकिन पौलुस बपतिस्मा पर ज़ोर क्यों देता है? संभवतः इसे समझने का तरीका यह है कि पॉल ने मोक्ष के अनुभव और प्रक्रिया की कल्पना कई तत्वों से मिलकर की होगी जो सभी एक साथ बंधे हैं। अर्थात्, विश्वास और रूपांतरण और पवित्र आत्मा का उपहार और प्राप्ति और जल बपतिस्मा को एक एकीकृत अनुभव के रूप में देखा गया होगा। इसलिए, बपतिस्मा एक तरीके के रूप में कार्य करेगा, एक ऐसी चीज़ के रूप में जो संपूर्ण रूपांतरण अनुभव के लिए खड़ा है, भाषण के

एक प्रकार के अलंकार का उपयोग करना या मेटानीमी नामक भाषा का उपयोग करना, जहां एक भाग पूरे के लिए खड़ा होता है।

इसलिए पॉल बपतिस्मा के अनुभव, बपतिस्मा के भौतिक संस्कार को रूपांतरण की संपूर्ण प्रक्रिया के लिए संदर्भित कर सकता है। प्रक्रिया के लिए खड़े होना, विश्वास और रूपांतरण की पूरी प्रक्रिया और पवित्र आत्मा प्राप्त करना, पानी का बपतिस्मा उस पूरे अनुभव को संदर्भित करने का साधन मात्र होगा। तो पॉल कह सकता है कि पानी के बपतिस्मा के माध्यम से, विश्वास और रूपांतरण को मानते हुए, वगैरह-वगैरह, पानी के बपतिस्मा के माध्यम से, फिर एक व्यक्ति मसीह से जुड़ जाता है, उसकी मृत्यु और उसका पुनरुत्थान होता है।

तो फिर ऐसा करने से, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में शामिल होने से, हम फिर पुराने युग, पुराने युग, और आदम के अधीन पाप और मृत्यु के शासन और वर्चस्व से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन उनके पुनरुत्थान में शामिल होने से, हमारा भी उद्घाटन होता है या हम मुक्ति के नए युग में भी भाग लेते हैं, जिसे ईसा मसीह अपने पुनरुत्थान के माध्यम से शुरू करते हैं, जो जीवन की विशेषता है। इसलिए, पॉल के लिए, अब तक उसका कहना यह है कि ईसाइयों के लिए पाप में रहना जारी रखना असंगत है।

यह प्रश्न, क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह बढ़ सके, इस तथ्य के आधार पर बेतुका है कि हम बपतिस्मा के माध्यम से मसीह से जुड़कर, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान से जुड़कर पाप के लिए मर चुके हैं। हम पाप के लिए मर गए हैं क्योंकि हमने एक ऐसी मृत्यु का अनुभव किया है जो किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ने के कारण पाप में पुराने युग के शासन को समाप्त कर देती है जो वास्तव में मर चुका है, यीशु मसीह का व्यक्तित्व। लेकिन इससे भी अधिक, हम न केवल आदम के युग और पाप के प्रभुत्व से मुक्त हो गए हैं, बल्कि अब मसीह के पुनरुत्थान में शामिल होने के माध्यम से, हम नए युग, एक नए युग में भी भाग लेते हैं, और अंततः भाग लेने की आशा रखते हैं अंत में मसीह के पुनरुत्थान में।

इसके बाद श्लोक 5 से 10 तक और अधिक विस्तार से व्याख्या करें और इसे और भी आगे बढ़ाएं। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में उसके साथ एकजुट होने का क्या मतलब है? श्लोक 5 से 10 इसे और स्पष्ट करते हैं। और यहाँ, ध्यान दें कि पॉल सबसे पहले, श्लोक 6 में गुलामी की भाषा का उपयोग करता है, पाप के लिए मरने और इस वर्तमान युग से मुक्त होने का वह हिस्सा यह है कि हम अब पाप के गुलाम नहीं हैं।

हम अब इसके शासन के अधीन नहीं हैं। पुनः, पॉल पाप की कल्पना केवल पाप के व्यक्तिगत कृत्यों के रूप में नहीं करता है, हालाँकि यह उसका एक हिस्सा है, बल्कि यह केवल पाप के एक शक्ति और स्वामी होने का परिणाम है जो हमें नियंत्रित और हावी करता है। श्लोक 6 में मसीह के साथ जुड़कर पाप के प्रति मरने का एक हिस्सा यह है कि अब हम मुक्त हो गए हैं, हम अब पाप से गुलाम नहीं हैं।

हम इसके अत्याचार से मुक्त हैं। यह पॉल का मुख्य बिंदु प्रतीत होता है, कि उसकी मृत्यु में मसीह के साथ जुड़कर, हम पाप के लिए मर गए हैं, इसलिए हम अपने जीवन पर शासन और पाप के अत्याचार से मुक्त हो गए हैं। लेकिन उन दो अन्य तरीकों पर ध्यान दें जिनसे वह हमारे ऊपर पाप के प्रभुत्व का वर्णन करता है।

नंबर एक, वह श्लोक 6 में पुराने स्व की भाषा का उपयोग करता है। वह कहता है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे पुराने स्व को क्रूस पर चढ़ाया गया है। फिर, हमें शायद इस भाषा को अध्याय 5, 12 से 21 के प्रकाश में समझना चाहिए। पुराना स्व मेरा, मेरे अस्तित्व का, या मेरा कोई अलग हिस्सा, या कोई आवेग नहीं है जो मेरे किसी विशिष्ट स्थान पर रहता है। शरीर, लेकिन शायद पुराने स्व का तात्पर्य मेरे संपूर्ण अस्तित्व, मेरी संपूर्णता से है, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से, एडम के प्रभाव के तहत, एडम के अधीन पुराने युग के हिस्से के रूप में जो नियंत्रित है, जिसके तहत हम नियंत्रित और प्रभुत्व और शासित हैं पाप से।

वह पुराना आत्म, जो मैं आदम में था, मेरा संपूर्ण आत्म, पुराने युग के तहत पाप द्वारा शासित, अब क्रूस पर चढ़ाया गया है और मौत के घाट उतार दिया गया है। मुझे लगता है कि पॉल की सूली पर

चढ़ने की भाषा जानबूझकर है क्योंकि, फिर से, जिस तरह से सूली पर चढ़ाया गया है वह यह है कि हम यीशु के सूली पर चढ़ने में शामिल हो गए हैं, उनकी खुद की मृत्यु और सूली पर चढ़ना किसी तरह से हमारी भी है। मसीह के साथ जुड़े होने के कारण, हम उसमें भाग लेते हैं, इसलिए वह कह सकता है, मेरा पुराना स्व, मेरा कोई अलग हिस्सा नहीं जो मिटा दिया जाता है, लेकिन मैं पुराने युग के अधीन हूं, आदम के अधीन हूं, पाप द्वारा शासित और नियंत्रित हूं, अब हमें मसीह के साथ जुड़ने और उनकी मृत्यु में भाग लेने के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया है।

लेकिन इसके अलावा, ध्यान दें कि वह पाप के शरीर की भाषा का उपयोग करता है, ताकि पाप के शरीर को नष्ट या खत्म किया जा सके। फिर से, मुझे लगता है कि पाप का शरीर सिर्फ मेरे पापी भौतिक शरीर का संदर्भ नहीं दे रहा है, कि भौतिक शरीर के बारे में कुछ पापपूर्ण है जो पॉल को मेरे आध्यात्मिक भाग के विपरीत घृणित लगता है। लेकिन फिर, इसके बजाय, पाप के शरीर को संभवतः मेरे पुराने स्व के समान ही समझा जाना चाहिए, अर्थात्, मेरा संपूर्ण स्व पाप के शासन और अत्याचार के अधीन, पुराने युग के हिस्से के रूप में एडम के अधीन, जो अब है नष्ट कर दिया गया और खत्म कर दिया गया, फिर से, यीशु मसीह की मृत्यु में शामिल होकर।

तो, यीशु मसीह की मृत्यु के साथ हमारा संबंध इतना मजबूत है कि पॉल इस भाषा का उपयोग कर सकता है कि मैं पुराने युग के तहत एडम में कौन था, पाप द्वारा शासित था, क्रूस पर चढ़ाया गया था, नष्ट कर दिया गया था, पूरी तरह से खत्म कर दिया गया था। तो वह श्लोक 7 इसके पीछे निहित प्राथमिक सिद्धांत को स्पष्ट करता प्रतीत होता है, जब पॉल कहता है, जो कोई भी मर गया है वह पाप से मुक्त हो गया है। और यही पॉल का पूरा तर्क है।

इसके लिए मृत्यु की आवश्यकता है। बुढ़ापे में पाप के अत्याचार से मुक्त होने का एकमात्र तरीका मरना है। और फिर, पॉल का मानना है कि बपतिस्मा के माध्यम से शामिल होने के कारण ईसाईयों के साथ ठीक यही हुआ है, एक प्रकार के हिस्से के रूप में जो संपूर्ण रूपांतरण अनुभव के लिए खड़ा है।

बपतिस्मा के माध्यम से, हम यीशु की मृत्यु में शामिल हो गए हैं, जो भगवान के लोगों के जीवन में पाप के शासन और बुढ़ापे को समाप्त करता है। तो फिर श्लोक 9 और 10 बस चलते हैं, और एक बार फिर, ध्यान दें कि कैसे 9 और 10 में, मसीह की मृत्यु का वर्णन इस तरह से किया गया है जो श्लोक 2 की भाषा का कुछ अंश लेता है। श्लोक 2 में, जब पॉल कहता है, हम' हम पाप के लिए मर गए, अब हम इसमें कैसे रह सकते हैं? और श्लोक 9 और 10 में, पॉल यह सुनिश्चित करना चाहता है कि यही वह अनुभव है जिसमें मसीह ने भाग लिया था। या यही मसीह की मृत्यु को समझने का तरीका है।

तो श्लोक 9 और 10 में, वह कहता है, क्योंकि हम जानते हैं कि चूंकि मसीह मृतकों में से जी उठा था, वह फिर से नहीं मर सकता। मृत्यु का अब उस पर प्रभुत्व नहीं रहा, वह अब उस पर शासन नहीं करती। उसी प्रकार श्लोक 6 में, अब पाप नहीं रहेगा और मृत्यु अब हम पर शासन नहीं करेगी।

जिस मौत से वह मरा, वह हमेशा के लिए पाप करने के लिए मर गया। जो पद 2 को दर्शाता है, हम पाप के लिए मर गए हैं, परन्तु वह जो जीवन जीता है, वह परमेश्वर के लिए जीता है। तो जिस तरह से मसीह की पाप के लिए मृत्यु का वर्णन छंद 9 और 10 में किया गया है, यह उसी तरह का प्रतिबिंब है जिस तरह से इसका वर्णन किया गया है, जिस तरह से पाप के लिए हमारी मृत्यु का वर्णन छंद 2 में किया गया है। इसलिए पॉल, वह फिर से स्पष्ट करना चाहता है, परमेश्वर के लोगों के पाप में बने रहने के बारे में एक असंगतता है, क्योंकि वास्तव में, वे पाप के लिए मर चुके हैं।

अर्थात्, वे अत्याचार और पाप की शक्ति से मर गये हैं। पाप अब उन पर प्रभुता नहीं करता, क्योंकि वे मर गए हैं। उन्हें युग, वर्तमान युग और आदम के अधीन युग, और पाप के शासन और अत्याचार से मुक्त करना।

लेकिन जिस तरह से उनकी मृत्यु हुई है, जिस मृत्यु का उन्होंने अनुभव किया है, वह किसी और की मृत्यु के साथ एकजुट होकर हुई है। यानी ईसा मसीह की मृत्यु, जिससे पुराने युग का अंत हो

जाता है। लेकिन फिर, पॉल स्पष्ट है कि, केवल यीशु की मृत्यु के लिए एकजुट होने से अधिक, हम यीशु के पुनरुत्थान के लिए भी एकजुट हुए हैं।

और इसलिए, हम एक नया जीवन जीने के लिए बड़े हुए हैं। तो यह सिर्फ पाप की शक्ति से मुक्त होना नहीं है, बल्कि यह मसीह के पुनरुत्थान में शामिल होकर एक नए जीवन में भाग लेना है। हालाँकि, इस भाषा में से कुछ पर ध्यान दें।

उदाहरण के लिए, पद 9 में, क्योंकि हम जानते हैं कि चूँकि मसीह मृतकों में से जी उठा था, इसलिए वह दोबारा नहीं मर सकता। मृत्यु का अब उस पर प्रभुत्व नहीं रहा। जिस मौत से वह मरा, वह हमेशा के लिए पाप करने के लिए मर गया।

लेकिन वह जो जीवन जीता है, वह भगवान के लिए जीता है। लेकिन श्लोक 8 का समर्थन करने के लिए, जो उससे पहले है, वह कहता है, यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमें विश्वास है कि हम भी उसके साथ रहेंगे। भविष्य काल पर ध्यान दें।

व्याकरणिक दृष्टि से हम उसके साथ रहेंगे। इस पाठ बहस के व्याख्याकारों, क्या हमें इसे सख्त भविष्य के रूप में लेना चाहिए? अर्थात्, दूसरे आगमन के सन्दर्भ के रूप में। हम भविष्य में, दूसरे आगमन में उसके साथ रहेंगे।

या यह अधिक तार्किक है? अगर ये सच है तो ये भी सच ही होगा. ताकि मसीह के पुनरुत्थान में भागीदारी भी मौजूद हो सके। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई इसे किस तरह से लेता है, दोनों ही संदर्भ में स्पष्ट हैं।

यह स्पष्ट है कि हम पहले से ही बपतिस्मा के माध्यम से मसीह के पुनरुत्थान में भाग लेते हैं। यद्यपि उस पुनरुत्थान का अंतिम अनुभव, और पाप के अत्याचार से अंतिम मुक्ति, भविष्य में, नई सृष्टि, या मसीह के दूसरे आगमन तक नहीं आती है। इस मामले में, हम अभी भी, अंततः, मसीह के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हालाँकि, फिर भी, पॉल ने पहले ही नए जीवन में चलने या जीने की हमारी क्षमता पर जोर दिया है। रोमियों अध्याय 6 के श्लोक 4 में। तो यह सब इस बिंदु पर बहस करने के लिए है, कि श्लोक 1 में प्रश्न में व्यक्त परिप्रेक्ष्य बेतुका है। ईसाइयों के बारे में, या ईसाई पाप करने के परिप्रेक्ष्य के बारे में एक विरोधाभास, एक असंगतता है, ताकि अनुग्रह बढ़ सके, क्योंकि भगवान के लोग पाप के लिए मर गए हैं।

उनकी मृत्यु में बपतिस्मा के माध्यम से मसीह के साथ एकजुट होने के कारण, भगवान के लोग पाप के लिए मर गए हैं, ताकि मसीह के साथ एकजुट होने का दावा करने में असंगतता हो, फिर भी पाप करना जारी रहे। तो पॉल कहते हैं कि यह एक बेतुकापन है, क्योंकि हम पहले ही उस मृत्यु का अनुभव कर चुके हैं जो पुराने युग में पाप की शक्ति को तोड़ देती है, जो हमें उससे मुक्त कर देती है। और हमें यीशु की मृत्यु, दफनाने और उसके पुनरुत्थान में शामिल होने के आधार पर, एक नए युग में, एक नए जीवन में भाग लेने के लिए भी बढ़ा किया गया है।

इसलिए पुराने युग में हमारे अस्तित्व को समाप्त करने के लिए मृत्यु आवश्यक है। हमारे ऊपर से मृत्यु या पाप की शक्ति को तोड़ने का एकमात्र तरीका मरना है। और पॉल आश्चर्य है कि यह वास्तव में जुड़ने के कारण हुआ है, हालाँकि वह यह स्पष्ट नहीं करता है कि हम यीशु मसीह से कैसे जुड़े हैं।

वास्तव में, वह अभी भी आश्चर्य है कि यीशु की ऐतिहासिक मृत्यु किसी तरह से हमारी हो गई है। मसीह के साथ एकजुट होकर, हम उसमें भाग लेते हैं, ताकि उनकी मृत्यु वह मृत्यु हो जिसका हम अनुभव करते हैं जो पुराने युग और हमारे ऊपर उसके प्रभुत्व को समाप्त करती है। लेकिन उसी तरह, हम भी उसके पुनरुत्थान के साथ एकजुट हो गए हैं, जो हमें नए जीवन में ले जाता है, हमें जीवन के नए युग में भाग लेने का कारण बनता है, लेकिन इससे भी अधिक, हमें भविष्य के पुनरुत्थान की आशा देता है, और अंततः उस पर काबू पाता है। पाप की शक्ति.

लेकिन पाठ फिर श्लोक 11 में समाप्त होता है। श्लोक 11 में, इस काल्पनिक आपत्ति को दूर करने में, 6.1 में इस बेतुके प्रश्न के रूप में, पॉल अब इसे एक आदेश के रूप में एक नैतिक

उपदेश के साथ पलट कर समाप्त करता है। ध्यान दें, इसकी शुरुआत इस तरह से होती है, यानी कि लेखक ने श्लोक 9 और 10 में जो कहा है, उसके आधार पर।

यानी इसी तरह. किस तरह से? पद 10 के अनुसार, जिस प्रकार मसीह पाप के लिए मर गया, ताकि मृत्यु उस पर फिर से हावी न हो, उसी प्रकार, और अब वह परमेश्वर के लिए जीवन जीता है, उसी प्रकार, पॉल कहता है, अपने आप को गिनें पाप के लिए मरा हुआ, जिस तरह से मसीह पाप के लिए मर गया, उसी तरह अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ समझो, लेकिन उसी तरह, कविता 10 में, कि भगवान जीवित है, कि यीशु जीवित है, जिस जीवन में वह रहता है, वह जो परमेश्वर के लिये जीवित है, उसी प्रकार तुम भी अपने आप को परमेश्वर के लिये, अर्थात् मसीह यीशु में जीवित समझो। फिर, यह उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में मसीह के साथ एकजुट होने के माध्यम से है, कि पॉल कह सकता है कि यह सब सच है।

दिलचस्प बात यह है कि विचार शब्द एक ऐसा शब्द है जो न केवल विचार करने, बल्कि निर्णय लेने, इस मामले पर विचार करने का सुझाव देता है। लेकिन फिर, यह महज़ एक कल्पना नहीं है। किसी चीज़ को ऐसा मानने का विचार नहीं है, भले ही वह वास्तव में ऐसा नहीं है।

या इसे इस तरह से सोचें, भले ही ऐसा न हो। लेकिन इसके बजाय, यह एक निर्णय या विचार है जो कोई कल्पना नहीं है, बल्कि यह एक वास्तविकता है, यह किसी चीज़ को सत्य और वैध मानना है, क्योंकि पॉल कहते हैं, वास्तव में, यह एक वास्तविकता है, हम खुद को पाप के लिए मृत मान सकते हैं और ईश्वर के लिए जीवित, एक कल्पना के रूप में नहीं, बल्कि एक वास्तविकता के रूप में, क्योंकि, वास्तव में, हम, वास्तव में, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की वास्तविकता से जुड़ गए हैं। तो श्लोक 11 में यह विचार करना या निर्णय करना एक वास्तविकता है, इसे मसीह की स्वयं की मृत्यु और पुनरुत्थान की वास्तविकता के प्रकाश में देखा जाना चाहिए जो अब मसीह के साथ एकजुट होने और उसकी मृत्यु में किसी तरह से भाग लेने के कारण हमारा हो गया है और उसका पुनरुत्थान.

मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि यह दिलचस्प है कि पॉल इसे एक आदेश के साथ समाप्त करता है, क्योंकि ऐसा लगता है, कुछ अर्थों में, यह पाठ में तनाव पैदा करता है। क्योंकि ध्यान दें कि पॉल ने इस बिंदु तक किस प्रकार कठोर, अयोग्य भाषा का प्रयोग किया है। श्लोक 2 से शुरू करते हुए, वह कहते हैं, हम पाप के लिए मर चुके हैं, अब हम इसे कैसे जी सकते हैं? वह पद 6 में ऐसे शब्दों का उपयोग करता है, हम जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व क्रूस पर चढ़ाया गया था।

फिर से, ईसा मसीह के सूली पर चढ़ने का संदर्भ देने वाली भाषा का उपयोग करना। और फिर वह कहता है, कि पाप का शरीर नाश हो जाए। भाषा शायद उससे भी अधिक मजबूत है, नष्ट हो सकती है।

और फिर पद 7, जो कोई मर गया वह पाप से मुक्त हो गया। तो आपके पास यह मजबूत, अयोग्य भाषा है। हम पाप के लिये मर गये हैं।

पाप का शरीर नष्ट हो गया। पुराने स्व को सूली पर चढ़ा दिया गया है। मृत्यु के कारण, हम पाप से मुक्त हो गए हैं।

पाप एक शक्ति है जो लोगों पर शासन और अत्याचार करती है। अब हमारे पास, पॉल काफी कड़ी भाषा का उपयोग करता है। हम मर चुके हैं।

हमें क्रूस पर चढ़ाया गया है। पाप का शरीर नष्ट हो गया। हम पाप से मुक्त हो गये हैं।

तो ऐसा कैसे है कि पॉल इस खंड को एक आदेश या आदेश के साथ समाप्त करता है? इससे पाठ में तनाव उत्पन्न होता प्रतीत होता है। यदि हम वास्तव में पाप के लिए मर गए हैं, यदि पाप का शरीर नष्ट हो गया है, यदि पुराना स्व क्रूस पर चढ़ाया गया है, यदि मृत्यु के माध्यम से हम पाप से मुक्त हो गए हैं, तो पॉल को अब हमें ऐसा न करने के लिए क्यों कहना पड़ा, क्यों क्या उसे हमें यह बताना होगा कि हम स्वयं को पाप के लिए मृत और ईश्वर के लिए जीवित समझें? यदि यह वास्तव में वास्तविकता है तो हमें यह बताने और आदेश देने की आवश्यकता क्यों है? मुझे लगता है कि

हम यहां पाठ में जो पाते हैं, वह उस तनाव का हिस्सा है जो हम पूरे नए नियम में पाते हैं कि मसीह से जुड़े होने के कारण जो पहले से ही सत्य है, लेकिन जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है या समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि अंत नहीं आया है। जिसे ईसाई धर्मशास्त्री ईसा मसीह के दूसरे आगमन के रूप में पहचानते हैं।

क्योंकि अंतिम अंत समय का पुनरुत्थान एवं नव सृजन अभी तक नहीं हुआ है, इसका उद्घाटन केवल आरंभिक आंशिक रूप में ही हुआ है। यह पहले से ही मौजूद है, लेकिन यह अभी तक अपनी पूर्णता और पूर्णता में नहीं आया है। यह उस तनाव के कारण है, जो पहले से ही सत्य है, जो पहले ही शुरू और उद्घाटन किया जा चुका है और जो अभी तक पूरा नहीं हुआ है और समाप्त नहीं हुआ है, उसके बीच तनाव है।

ईसाई उन दोनों के बीच तनाव में रहते हैं। यह वह तनाव है जो पॉल की भाषा में झलकता है। तो पहले से ही है, क्योंकि हम पहले से ही मसीह से जुड़ चुके हैं, पहले से ही इसका मतलब है कि पॉल पूर्ण भाषा का उपयोग कर सकता है।

हाँ, हम पहले ही पाप के लिए मर चुके हैं। पाप का शरीर नष्ट हो गया। पुराने स्व को सूली पर चढ़ा दिया गया है।

हम पहले ही पाप से मर चुके हैं और इसलिए हम इससे मुक्त हो गए हैं। यह पहले से ही सच है क्योंकि हम मसीह के साथ एकजुट हो चुके हैं। लेकिन अभी तक नहीं होने के कारण, क्योंकि पूर्णता, अंतिम पुनरुत्थान और नई सृष्टि अभी तक नहीं आई है, हमें अभी भी अनिवार्यता की आवश्यकता है।

हमें उस तनाव के बीच, जो पहले से ही सत्य है, लेकिन जो अभी तक पूरा और पूर्ण नहीं किया गया है, उसके बीच में रहते हुए उस सत्य पर विचार करने की आवश्यकता है। उस समय के बीच, भगवान के लोगों के लिए जो आवश्यक है वह यह विचार करने और गणना करने की प्रक्रिया है कि हम मसीह के साथ जुड़ने के कारण पाप के लिए मर गए हैं और अब हम भगवान

के लिए जीते हैं। अन्य शब्दावली जो न्यू टेस्टामेंट के छात्र अक्सर उपयोग करते हैं वह सूचक और अनिवार्य के बीच का तनाव है।

संकेत इस बात के कथन हैं कि मसीह से जुड़ने के कारण जो पहले से ही सत्य है। तो इसका संकेत यह है कि आप पाप के लिए मर गए हैं। इसमें अब और क्यों रहना? सूचक यह है कि पुराने स्व को सूली पर चढ़ा दिया गया है।

एक बार फिर बहुत सख्त भाषा का प्रयोग किया। फिर, सूचक यह है कि पाप का शरीर नष्ट हो गया है। श्लोक 7 में, आगे का संकेत, क्योंकि जो कोई भी पाप के लिए मर गया है, जो कोई भी मर गया है वह पाप से मुक्त हो गया है।

तो पहले छंद 2 से 10 मूल रूप से संकेतात्मक, सरल कथन हैं जो मसीह के साथ जुड़े होने के कारण सत्य हैं। फिर श्लोक 11 में अनिवार्यता आती है जो पहले से मौजूद चीज़ को उस चीज़ के साथ संतुलित करती है जो अभी तक नहीं हुई है। साथ ही, सांकेतिक आधार या अनिवार्यता को संभव बनाता है।

यदि यह वास्तव में सत्य नहीं है तो स्वयं को पाप के लिए मृत और ईश्वर के लिए जीवित मानना असंभव है। अनिवार्य के कोई दांत नहीं हैं। यदि यह संकेतक पर आधारित नहीं है तो इसमें बल की कमी है।

यह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की वास्तविकता है जिसके साथ हम जुड़ गए हैं। तो, यह फिर से संकेत है कि पॉल इतने मजबूत बयान क्यों दे सकता है। तुम पाप के लिये मर गये हो।

पाप का शरीर नष्ट हो गया। पुराने स्व को सूली पर चढ़ा दिया गया है। लेकिन जो पहले से ही है और जो अभी भी महसूस किया जाना बाकी है, उसके बीच यह तनाव अनिवार्यता की आवश्यकता पैदा करता है।

इसलिए पॉल श्लोक 11 में समाप्त हो सकता है। इसलिए, आपको अपने आप को पाप के लिए मृत और ईश्वर के लिए जीवित मानने की आवश्यकता है। पहले से ही और अभी नहीं के बीच इस तनाव में जीवन जीने का आदेश, लेकिन एक अनिवार्य, एक आदेश जो मान्य और आवश्यक है और करने योग्य है क्योंकि यह यीशु की अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की वास्तविकता पर आधारित है जिससे हम जुड़े हुए हैं।

ध्यान दें कि अध्याय 6, 1 से 11 इसके बाद आने वाली चीज़ से कैसे संबंधित है। श्लोक 12, और आप भी देखेंगे, यहीं पर अंग्रेजी अनुवाद दिलचस्प हैं। आप देखेंगे कि कई अंग्रेजी अनुवाद छंदों को 6, 1 से 11 तक थोड़ा अलग ढंग से तोड़ते हैं।

एनआईवी पाठ जिसे मैं देख रहा हूं, मूल एनआईवी, श्लोक 11 पर एक नया पैराग्राफ शुरू करता है। यह श्लोक 11 को श्लोक 1 से 10 तक अलग करता है, शायद इसलिए कि श्लोक 11, फिर से, अनिवार्य है। यह पाठकों के लिए एक आदेश है कि वे श्लोक 1 से 10 तक की वास्तविकता के आधार पर अपने जीवन में जो सत्य है उसे अपनाएँ।

लेकिन ध्यान दें श्लोक 11 इसलिए से शुरू होता है, जो अक्सर किसी बात को पहले कही गई बातों से जोड़ने का एक मजबूत तरीका है, और अक्सर एक नए विचार को प्रस्तुत करने के लिए उपयोग किया जाता है ताकि संभवतः श्लोक 11 को निष्कर्ष के रूप में 1 से 10 तक जाना चाहिए। 1 से 10 तक। लेकिन फिर श्लोक 11, या मुझे क्षमा करें, अध्याय 6 के अंत तक श्लोक 12 अधिक विस्तार से काम करते प्रतीत होते हैं और श्लोक 12, 11 के आदेश को और अधिक विस्तार से बताते हैं। तो 11 एक तरह का है सामान्य अनिवार्यता।

अपने आप को पाप के लिए मृत और ईश्वर के लिए जीवित समझें। लेकिन वह कैसा दिखता है? इसमें क्या शामिल है? अध्याय 6, 12, श्लोक 12 और अध्याय के अंत तक अधिक विस्तार से बताया गया है कि इसमें क्या शामिल है। तो श्लोक 12 शुरू होता है, इसलिए, आधारित, अर्थात्, श्लोक 1 से 10, या 1 से 11, विशेष रूप से श्लोक 11 पर आधारित, इसलिए, क्योंकि आप मसीह के लिए मर गए हैं, मसीह के साथ एकजुट हो गए हैं, और मसीह के माध्यम से पाप करने के लिए

मर गए हैं, और एक नया जीवन जीने के लिए मसीह के साथ पहचान करके बड़ा किया गया है, इसलिए, पाप को अपने नश्वर शरीर में शासन न करने दें ताकि आप उसकी बुरी इच्छा का पालन करें।

तो अब, फिर से, संकेतात्मक श्लोक 1 से 10 के आधार पर, यहाँ अनिवार्यता है। अपने नश्वर शरीर में पाप को हावी न होने दें। पद 13, अपने शरीर के अंगों को दुष्टता के हथियार के रूप में पाप के लिये न चढ़ाओ, बल्कि अपने आप को उन लोगों के समान परमेश्वर को अर्पित करो जो मृत्यु से जीवन में लाए गए हैं, और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के हथियार के रूप में उसे अर्पित करो, क्योंकि पाप तुम्हारा स्वामी न होगा, क्योंकि तुम अब व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।

इसलिए इस अध्याय के बाकी हिस्सों को खोलना और अधिक विस्तार से बताना जारी है कि 1 से 11 के समापन आदेश में क्या शामिल है। इसलिए मैंने इस पाठ को देखने में जो करने की कोशिश की है, वह परिच्छेद को देखते हुए विभिन्न तरीकों को लागू करना है। शब्दावली और अर्थ के संदर्भ में, कुछ व्याकरणिक टिप्पणियाँ करने पर विचार करते हुए, इसकी धर्मशास्त्रीय सामग्री और धर्मशास्त्रीय विषयों पर विचार करते हुए, इसे इसके व्यापक संदर्भ और रोमियों 1 से 6 के अंतिम संदर्भ से जोड़ते हुए, लेकिन यह भी कि यह कैसे आगे बढ़ता है इसके पहले क्या आता है, और यह कैसे विलीन हो जाता है और इसके बाद जो आता है उसके लिए तैयारी करता है। इसलिए आशा है कि जैसे-जैसे हम पाठ के माध्यम से काम करेंगे, आप काम के विभिन्न तरीकों, ऐतिहासिक आलोचना, संदर्भ, शब्द अध्ययन, व्याकरणिक विश्लेषण, धार्मिक विश्लेषण इत्यादि की पहचान करने में सक्षम होंगे, यह देखने के लिए कि यह कैसे काम करता है।

जिन चीजों के बारे में हमने स्पष्ट रूप से बात नहीं की उनमें से एक नया में पुराना नियम था। जाहिर है कि अध्याय 5 से मसीह और आदम के बीच तुलना के आधार पर यह सतह के नीचे है। अब यह अध्याय 6, 1 से 11 तक सूचित करता है। लेकिन मैं पाठ के साथ वहीं रुकूंगा।

फिर, आशा है कि आपको इस बात का स्पष्ट अंदाज़ा हो जाएगा कि इस पाठ को समझने में विभिन्न तरीकों को कैसे लागू किया जा सकता है। मैं अगले सत्र में जो करना चाहता हूँ वह एक और पाठ को देखना है, विभिन्न साहित्यिक विशेषताओं, विभिन्न आवश्यकताओं और विभिन्न प्रश्नों के साथ एक बहुत ही अलग पाठ, और वह रहस्योद्घाटन की पुस्तक से एक अंश है। हम इसे विभिन्न व्याख्यात्मक पद्धतियों के संदर्भ में देखेंगे और यह उस पाठ की व्याख्या करने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित कर सकता है।